

सेवा यात्रा से जुड़े प्रतिभागियों से PM मोदी का संवाद, ट्रंप शी जिनपिंग की अहम मुलाकात, व्यापार से बोले सेवा को जीवन का मार्गदर्शक सिद्धांत बनाएं लेकर AI और ईरान तक कई मुद्दों पर होगी बातचीत



भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com
 संवाददाता अशोक कुमार सिंह
 नई दिल्ली, 24 सितंबर 2026 |
 प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को

कई राज्यों में भारी बारिश का रेड अलर्ट, मौसम विभाग ने जारी की चेतावनी

भारतार्थ खबर Bhaaraataarth.com
 संवाददाता अशोक कुमार सिंह
 नई दिल्ली, 24 सितंबर 2026। देश के कई हिस्सों में मानसून की सक्रियता के बीच मौसम विभाग ने आज पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, तटीय आंध्र प्रदेश और ओडिशा में भारी से बहुत भारी बारिश को लेकर रेड अलर्ट जारी किया है। कई अन्य राज्यों में भी तेज बारिश की संभावना जताई गई है। मौसम विभाग के अनुसार बिहार, झारखंड, विदर्भ, सिक्किम और पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्सों में भी भारी से बहुत भारी वर्षा हो सकती है।



इसके अलावा अंडमान—निकोबार, असम, मेघालय, पूर्वी मध्य प्रदेश, पूर्वी उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, केरल, माहे और मराठवाड़ा में भी भारी बारिश का पूर्वानुमान है। बारिश के साथ कई इलाकों में गरज—चमक, बिजली गिरने और तेज हवाओं की स्थिति बन सकती है। गोवा, महाराष्ट्र और रायलसीमा में अगले दो से तीन दिनों के दौरान आंधी—तूफान जैसी मौसम गतिविधियाँ जारी रहने की संभावना है। मौसम की इस स्थिति को देखते हुए प्रभावित क्षेत्रों में लोगों को स्थानीय प्रशासन और मौसम विभाग की चेतावनीयों पर ध्यान देने की सलाह दी गई है। लगातार बारिश वाले इलाकों में जलभराव और आवगमन प्रभावित होने की स्थिति पर भी नजर रखी जा रही है।

सेवा यात्रा

वडनगर से वाराणसी तक

सेवा यात्रा

के बीच यात्रा कर रहे हैं। यह अभियान 17 सितंबर को शुरू हुआ था और 7 अक्टूबर तक जारी रहने वाला है। यात्रा के दौरान प्रतिभागी विभिन्न शहरों, जिलों, तहसीलों और गांवों में पहुंचकर लोगों से संवाद कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने संवाद के दौरान कहा कि सेवा जीवन का मुख्य उद्देश्य और मार्गदर्शक सिद्धांत होना चाहिए। उन्होंने सेवा को सार्वजनिक कर्तव्य बताते हुए कहा कि सार्वजनिक जीवन में भी सेवा की भावना को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। यात्रा के दौरान स्वच्छता अभियान, पौधारोपण, ग्राम सभा संवाद, स्थानीय लोगों और लाभार्थियों से बातचीत तथा स्कूलों, अस्पतालों और अन्य सामुदायिक स्थानों पर सेवा गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। अभियान में युवाओं की भागीदारी और सामुदायिक जुड़ाव पर भी जोर दिया जा रहा है। सेवा यात्रियों ने प्रधानमंत्री के साथ अपने यात्रा अनुभव साझा किए। प्रधानमंत्री ने युवाओं की भागीदारी और जमीनी स्तर पर लोगों से संवाद को महत्वपूर्ण बताया।



भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com
वॉशिंगटन, 24 सितंबर 2026 ।
अमेरिका और चीन के बीच संबंधों को लेकर आज दुनिया की नजर वॉशिंगटन पर है। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग अमेरिका की राजकीय यात्रा पर पहुंचे हैं और आज उनकी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ व्हाइट हाउस में महत्वपूर्ण बैठक हो रही है। दोनों नेताओं के बीच व्यापार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ताइवान और ईरान से जुड़े मुद्दों पर बातचीत होने की संभावना है। यह यात्रा ऐसे समय हो रही है जब अमेरिका और चीन के बीच व्यापारिक तनाव को नियंत्रित रखने के लिए दोनों पक्षों ने मौजूदा व्यापारिक समझौते को आगे बढ़ाने पर सहमत जताया है। इसके बावजूद दोनों देशों के बीच तकनीक, AI और रणनीतिक

मुद्दों को लेकर मतभेद बने हुए हैं। शी जिनपिंग की यह यात्रा एक दशक से अधिक समय बाद वॉशिंगटन की उनकी पहली यात्रा है। अमेरिकी राष्ट्रपति कार्यालय के अनुसार, दोनों देशों के शीर्ष नेताओं की बैठक के साथ राजकीय स्वागत समारोह और व्हाइट हाउस में राजकीय रात्रिमहोली भी आयोजित किया जा रहा है। बैठक में व्यापार और टैरिफ, 1^८ और उन्नत तकनीक, ताइवान, तथा ईरान और मध्य-पूर्व की स्थिति जैसे मुद्दे महत्वपूर्ण रह सकते हैं। इन विषयों पर दोनों देशों के हित कई जगह अलग-अलग हैं, इसलिए बातचीत को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खास दिलचस्पी बनी हुई है। अमेरिका-चीन वातावरण का असर केवल दोनों देशों के संबंधों तक सीमित नहीं माना जा रहा है। व्यापार, तकनीक और वैश्विक भू-राजनीति से जुड़े फैसलों का प्रभाव अंतरराष्ट्रीय बाजार और अन्य देशों की रणनीतियों पर भी पड़ सकता है।

क्लिक से पहले सोचें, लालच से पहले रुकें छात्रों को दिल्ली पुलिस का सुरक्षा मंत्र

भारतार्थ खबर
Bhaarataraatham
नई दिल्ली, 24 सितंबर 2026

डिजिटल दौर में बढ़ती साइबर ठगी और युवाओं में नशे के दुष्प्रभावों को लेकर पूर्वी जिला पुलिस में महाराज अग्रसेन कॉलेज, न्यू अशोक नगर में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। विद्यार्थियों और शिक्षकों को साइबर अपराध से बचाव के उपायों के साथ नशे से दूर रहने के लिए जागरूक किया गया। कार्यक्रम में विशेष पुलिस आयुक्त, कानून एवं व्यवस्था जून-1, देवेश चंद्र श्रीवास्तव ने विद्यार्थियों को साइबर सुरक्षा और नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि डिजिटल तकनीक ने सुविधाएं बढ़ाई हैं, लेकिन इसके साथ साइबर खतरा भी बढ़े हैं। ऐसे में जागरूकता



और सावधानी डिजिटल सुरक्षा का महत्वपूर्ण आधार है। डिजिटल असेस्ट के नाम पर डराया तो रहें सावधान पुलिस अधिकारियों ने विद्यार्थियों को साइबर अपराध के विभिन्न तरीकों के बारे में जानकारी दी। इनमें डिजिटल असेस्ट, ऑनलाइन निवेश के नाम

विवरण साझा न करें। किसी अनजान या संदिग्ध लिंक पर क्लिक करने और जल्दबाजी में ऑनलाइन भुगतान करने से पहले उसकी विश्वसनीयता की जांच करने पर भी जोर दिया गया। पुलिस ने बताया कि साइबर ठगी में अपराधी अक्सर डर, लालच और जल्दबाजी जैसी स्थितियों का फायदा उठाते हैं। विद्यार्थियों को किसी संदिग्ध कॉल, संदेश या ऑनलाइन प्रस्ताव की स्थिति में घबराने के बजाय रुककर उसकी सत्यता जांचने की सलाह दी गई। नशे से दूर रहने की अपील कार्यक्रम में विद्यार्थियों को नशे के स्वास्थ्य और सामाजिक प्रभावों के बारे में भी जागरूक किया गया। पुलिस अधिकारियों ने कहा कि नशे की आदत व्यक्ति के स्वास्थ्य के साथ-साथ उसकी पढ़ाई, पारिवारिक संबंधों, सामाजिक जीवन और भविष्य की योजनाओं को भी प्रभावित कर सकती है। विद्यार्थियों से नशे से दूर रहने तथा अपने साथियों को भी इसके दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने की अपील की गई। कार्यक्रम के दौरान साइबर सुरक्षा और नशा मुक्ति से संबंधित जागरूकता वीडियोज भी प्रदर्शित किए गए, जिनके माध्यम से वास्तविक परिस्थितियों में सामने आने वाले जोखिमों और उनसे बचाव के तरीकों को समझाया गया। 'स्वच्छता ही सेवा-2026' के तहत दिलाई शपथ कार्यक्रम में 'स्वच्छता ही सेवा-2026' अभियान के तहत विद्यार्थियों और उपस्थित लोगों को स्वच्छता, जिम्मेदार नागरिक व्यवहार तथा सामाजिक जिम्मेदारी निभाने के

शपथ भी दिलाई गई। इस अवसर पर पूर्वी रेंज के संयुक्त पुलिस आयुक्त मिलिंद महादेव डुबरे, पूर्वी जिले के पुलिस उपायुक्त राजीव कुमार, आईपीएस, उत्तर-पूर्वी जिले के पुलिस उपायुक्त राहुल अलवाल तथा महाराजा अग्रसेन कॉलेज के प्राचार्य संजीव कुमार तिवारी सहित साहायक पुलिस आयुक्त, थाना प्रभारी और पूर्वी जिले के अन्य पुलिस अधिकारी मौजूद रहे। कार्यक्रम के माध्यम से पुलिस ने विद्यार्थियों को साइबर सुरक्षा के प्रति सतर्क रहने, डिजिटल जानकारी को सुरक्षित रखने और नशे से दूर रहकर अपने भविष्य पर ध्यान केंद्रित करने का संदेश दिया। साथ ही जिम्मेदार नागरिक के रूप में स्वच्छता और सामाजिक दायित्वों के प्रति सजग रहने की अपील की गई।

खाने के तेल पर बड़ी खबर:आयात शुल्क में कटौती, सूरजमुखी तेल पर ड्यूटी शून्य



भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com

ने प्रमुख खाद्य तेलों के आयात पर बेसिक कस्टम ज्यूटी में कटौती की है। सरकार के अनुसार इस कदम का उद्देश्य खाद्य तेलों की घरेलू कीमतों पर दबाव कम करना और उपभोक्ताओं को राहत देना है।

नई व्यवस्था के तहत कच्चे सूरजमुखी तेल पर बेसिक कस्टम ज्यूटी 10 प्रतिशत से घटाकर शुल्क कर दी गई है। वहीं कच्चे सोयाबीन और कच्चे पाम तेल पर ज्यूटी 10 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत की गई है। संबंधित रिफाइनड खाद्य तेलों पर भी शुल्क में बदलाव किया गया है।

सरकार का कहना है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में खाद्य तेलों की कीमतों में बढ़ोतरी से भारत में आयातित तेल की लागत और घरेलू कीमतों पर दबाव बढ़ा था। आयात शुल्क घटने से कच्चे खाद्य तेल

की लागत कम होने और इसका लाभ घरेलू आपूर्ति श्रृंखला के माध्यम से उपभोक्ताओं तक पहुंचाने की उम्मीद है। सरकार ने खाद्य तेल उद्योग और संरक्षित साप्लान से शुल्क दौटाती का लाभ उपभोक्ताओं तक पहुंचाने के लिए डिस्ट्रीब्यूटर कीमत और अधिकतम खुदरा मूल्य (MRP) में आवश्यक बदलाव करने को कहा है। साथ ही सरकार ने घरेलू रिफाइनिंग क्षमता को बढ़ावा देने के लिए कच्चे और रिफाइन तेल के बीच शुल्क अंतर बनाए रखा है। नवम्बर 24 सितंबर 2026 से प्रभावी है। हालांकि खुदरा बाजार में तेल की कीमतों में वास्तविक बदलाव कितना और कितनी जल्दी दिखाई देगा, यह अंतरराष्ट्रीय कीमतों आयात लागत, कंपनियों के मूल निर्धारण और बाजार की स्थिति पर निर्भर करेगा।



भारतार्थ खबर
Bhaaraataarth.com
संवाददाता अशोक कुमार सिंह
पुणे, 24 सितंबर 2026। भारत
के खेल इतिहास में एक बड़ी
उपलब्धि जुड़ने जा रही है। पुणे को
2032 UCI रोड वर्ल्ड चैंपियनशिप
की मेजबानी मिली है। यह पहली
बार होगा जब दनिया की प्रसिद्ध

साइकलिस्टों को एक मंच पर लाती है और इसके आयोजन से भारत में साइकिलिंग को लेकर भी रुचि बढ़ने की संभावना है। पुणे की दावेदारी में महाराष्ट्र सरकार और पुणे प्रशासन की भूमिका रही। अंतिम चयन से पहले पुणे की ओर से आयोजन की क्षमता और बुनियादी सुविधाओं से संबंधित प्रस्तुति भी की गई। 2032 की प्रतियोगिता भारत के लिए एक कवल एक अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजन नहीं होगी, बल्कि देश में रोड साइकिलिंग के विकास के लिहाज से भी महत्वपूर्ण अवसर बन सकती है। बड़े स्तर की प्रतियोगिता से खिलाड़ियों, प्रशिक्षण व्यवस्था, खेल पर्यटन और साइकिलिंग से जुड़े बुनियादी ढांचे पर ध्यान बढ़ने की संभावना है। भारत में साइकिलिंग को लेकर पहले से ही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गतिविधियाँ बढ़ रही हैं। ऐसे में विश्व चैंपियनशिप की मेजबानी से भारतीय खिलाड़ियों को घरेलू परिस्थितियों में दुनिया के शीर्ष खिलाड़ियों को देखने और उनसे प्रतियोगिता अनुभव हासिल करने का अवसर मिल सकता है।

सम्पादकीय

रूसी तेल पर अमेरिकी दबाव:भारत की ऊर्जा

सुरक्षा और रणनीतिक स्वायत्तता की परीक्षा

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

विश्व राजनीति में ऊर्जा अब केवल अर्थव्यवस्था का विषय नहीं रह गई है। यह कूटनीति, राष्ट्रीय सुरक्षा और रणनीतिक स्वायत्तता का भी महत्वपूर्ण आधार बन चुकी है। रूस से तेल खरीद को लेकर अमेरिका का नया प्रतिबंध कानून और उसके तहत संभावित शुल्क का दबाव भारत के सामने इसी व्यापक चुनौती को लेकर आया है। ऐसे समय में भारत के लिए सबसे बड़ा सवाल यह है कि वह अपनी ऊर्जा जरूरतों, आर्थिक हितों और विदेश नीति के स्वतंत्र निर्णयों के बीच संतुलन किस तरह बनाए। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा हस्ताक्षरित स्पदकेमल O- Graham Sanctioning Russia and Iran Act of 2026 में रूस से तेल और गैस खरीदने वाले देशों पर 100 प्रतिशत तक शुल्क लगाने का अधिकार दिया गया है। भारत और चीन उन प्रमुख देशों में शामिल हैं जिन पर इस प्रावधान का प्रभाव पड़ सकता है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने 23 सितंबर को संयुक्त राष्ट्र महासभा के दौरान अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो से मुलाकात में भारत की चिंताओं को सामने रखा। भारत सरकार ने कहा है कि वह अपने आर्थिक हितों और ऊर्जा सुरक्षा की रक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाएगी। रूस से तेल खरीद में बदलाव के संकेत भारत की स्थिति को समझने के लिए तेल आयात के आंकड़े महत्वपूर्ण हैं। रॉयटर्स के अनुसार अगस्त 2026 में भारत का तेल आयात अगस्त में लगभग 25 प्रतिशत बढ़कर 16.5 प्रतिशत घटकर लगभग 21 लाख बैरल प्रतिदिन रहा। सितंबर में यह आंकड़ा करीब 19 लाख बैरल प्रतिदिन रहने का प्रारंभिक अनुमान है। इसके साथ ही भारत ने मध्य-पूर्व के अन्य स्रोतों से तेल खरीद बढ़ाई है। यह बदलाव बताता है कि भारतीय तेल कंपनियां बाजार की परिस्थितियों और संभावित प्रतिबंधों को ध्यान में रखते हुए आपूर्ति स्रोतों में विविधता ला रही हैं। इराक से भारत का तेल आयात अगस्त में लगभग 25 प्रतिशत बढ़कर 1.71 लाख बैरल प्रतिदिन पहुंचा। संयुक्त अरब अमीरात और अन्य स्रोत भी भारत की आपूर्ति रणनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। लेकिन यहां चुनौती केवल यह नहीं है कि तेल किस देश से खरीदा जाए। असली चुनौती यह है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत, परिवहन लागत, बीमा, भुगतान व्यवस्था और भू-राजनीतिक जोखिम मिलकर भारतीय अर्थव्यवस्था पर कितना दबाव डालते हैं। सस्ता तेल बनाम व्यापक आर्थिक हित रूस से तेल खरीद ने पिछले वर्षों में भारत की ऊर्जा खरीद को विविध बनाने में भूमिका निभाई है। लेकिन किसी एक स्रोत पर अत्यधिक निर्भरता भी जोखिम पैदा कर सकती है। इसी कारण वर्तमान परिस्थितियां भारत को यह सोचने के लिए मजबूर कर रही हैं कि ऊर्जा सुरक्षा का अर्थ केवल सस्ता तेल हासिल करना नहीं, बल्कि विश्वसनीय और विविध आपूर्ति व्यवस्था तैयार करना भी है। भारत अपनी कुल कच्चे तेल की जरूरत का बड़ा हिस्सा आयात करता है। इसलिए अंतरराष्ट्रीय तेल कीमतों में तेज वृद्धि का असर परिवहन लागत से लेकर महंगाई, उद्योग और घरेलू उपभोक्ताओं तक पहुंच सकता है। यही कारण है कि विदेश नीति और ऊर्जा नीति को अब अलग-अलग खानों में देखने के बजाय एक समग्र रणनीति के रूप में देखना आवश्यक है। रणनीतिक स्वायत्तता का अर्थ भारत लंबे समय से अपनी विदेश नीति में रणनीतिक स्वायत्तता पर जोर देता रहा है। इसका अर्थ किसी एक शक्ति—गुट से पूरी तरह जुड़ने के बजाय अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर विभिन्न देशों के साथ संबंध बनाए रखना है। आज की परिस्थिति में इस सिद्धांत की व्यावहारिक परीक्षा हो रही है। एक तरफ अमेरिका भारत का महत्वपूर्ण रणनीतिक, तकनीकी और व्यापारिक साझेदार है। दूसरी ओर रूस भारत के लिए लंबे समय से रक्षा और ऊर्जा का महत्वपूर्ण सहयोगी रहा है। साथ ही पश्चिम एशिया, यूरोप और एशिया के अन्य देशों के साथ भी भारत के आर्थिक हित जुड़े हैं। ऐसे में किसी एक संबंध को दूसरे के विरुद्ध खड़ा करने के बजाय भारत के लिए विकल्पों का विस्तार करना महत्वपूर्ण होगा। ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण, नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार, रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार, घरेलू उत्पादन और ऊर्जा दक्षता इस दिशा में महत्वपूर्ण साधन हो सकते हैं। इसी समय भारत ठट्ठे जैसे बहुपक्षीय मंचों में आर्थिक सहयोग के नए रास्तों पर भी चर्चा कर रहा है। 24 सितंबर की रिपोर्टों के अनुसार ठट्ठे में भुगतान प्रणालियों की परस्पर उपयोगिता और स्थानीय मुद्राओं में व्यापार तथा निवेश जैसे विषयों पर चर्चा आगे बढ़ रही है। इन प्रयासों को डॉलर के विकल्प के रूप में देखने की बजाय यह समझना अधिक उचित होगा कि वैश्विक व्यापार में देशों के पास भुगतान और वित्तीय लेन-देन के अधिक विकल्प विकसित हो सकते हैं। भारत के लिए ऐसे विकल्प तब अधिक उपयोगी होंगे जब वे पारदर्शी, सुरक्षित, लागत प्रभावी और व्यापक अंतरराष्ट्रीय स्वीकार्यता वाले हों।



भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com भारतीय आध्यात्मिक परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि उसने धर्म को केवल पूजा—पद्धति तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे जीवन जीने की कला, सामाजिक समरसता, नैतिक आचरण और मानव सेवा से जोड़ा। संत परंपरा ने समय—समय पर समाज को सरलता, सादगी, संयम, परोपकार और सद्भाव का संदेश दिया। इसी व्यापक परंपरा में संत श्री राजाराम जी महाराज और उनके उपदेशों, जिन्हें श्रद्धालु 'गुरुवाणी' के नाम से जानते हैं, की परंपरा को उनके अनुयायी सामाजिक एवं आध्यात्मिक चेतना का महत्वपूर्ण माध्यम मानते हैं। गुरुवाणी का मूल संदेश केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं दिखाई देता। इसमें जीवन को सरल बनाने, अहंकार से दूर रहने, सामाजिक एकता को मजबूत करने, धर्म के प्रति जागरूकता बढ़ाने और मानव कल्याण के कार्यों में सहभागी बनने की प्रेरणा पर बल दिया जाता है। आज जब सामाजिक जीवन में आपसी दूरी, प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत हितों का

जलवायु संकट और मौसम की मार:आपदा के बाद राहत नहीं, पहले से तैयारी

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com बारिश, बाढ़, गर्मी, सूखा और अचानक बदलता मौसम अब केवल मौसमी घटनाएं नहीं रह गए हैं। इनकी तीव्रता और आर्थिक—सामाजिक प्रभाव ने शासन, शहरों की योजना और आपदा प्रबंधन के सामने नई चुनौती खड़ी कर दी है। भारत में इस वर्ष मौसम के अलग-अलग रूपों का असर कृषि, सड़क, आवास और जनजीवन पर दिखाई दे रहा है। कर्नाटक में भी भारतीय मौसम विभाग ने अगले दिनों के लिए भारी बारिश को लेकर ऑरेंज और तटीय क्षेत्रों में रेड अलर्ट जारी किया है। इसी बीच संयुक्त राष्ट्र महासभा के 81वें सत्र के दौरान आज न्यूयॉर्क में जलवायु शिखर सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, सम्मेलन का उद्देश्य जलवायु कार्रवाई, ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु न्याय और बदलते मौसम के बढ़ते प्रभावों से

निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग को गति देना है। यानी संदेश स्पष्ट हैकृजलवायु संकट अब भविष्य की चेतावनी नहीं, वर्तमान की प्रशासनिक चुनौती है। राहत से आगे बढ़कर तैयारी की जरूरत भारत में आपदा आने के बाद राहत पहुंचाना महत्वपूर्ण है, लेकिन आधुनिक आपदा प्रबंधन की कसौटी केवल राहत वितरण नहीं हो सकती। असली सवाल यह है कि क्या किसी शहर या जिले ने आपदा आने से पहले अपनी तैयारी पूरी कर ली थी? किस इलाके में पानी सबसे पहले भरता है? कौन—सी सड़कें बंद हो सकती हैं? किन बस्तियों में बुजुर्ग, बच्चे और कमजोर वर्ग अधिक जोखिम में हैं? अस्पतालों तक पहुंच कैसे बनाए रखी जाएगी? बिजली आपूर्ति बाधित होने की स्थिति में वैकल्पिक व्यवस्था क्या होगी? इन सवालों के जवाब आपदा आने के बाद तलाशना व्यवस्था की कमजोरी को दर्शाता है।

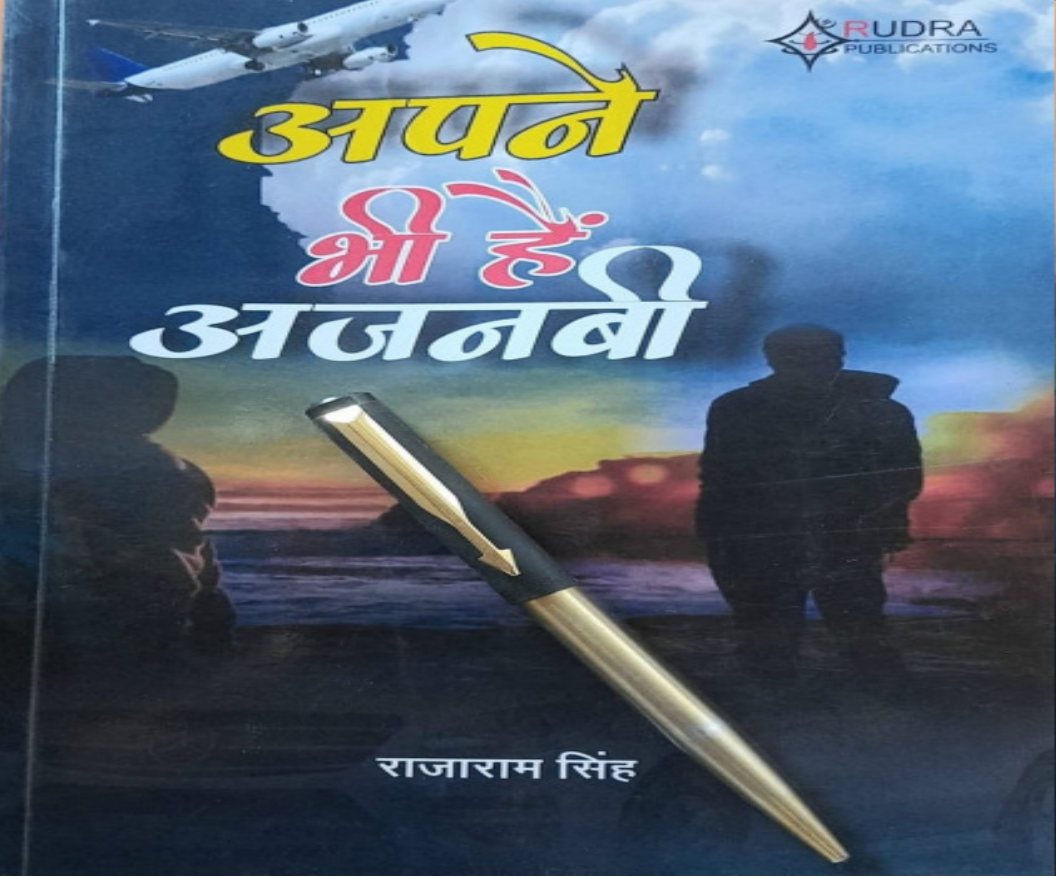
भारत सरकार के अनुसार, देश में मौसम निगरानी के लिए डॉलर खंडर, स्वचालित मौसम केंद्र और वर्षामपी नेटवर्क का विस्तार किया गया है। सरकार ने बताया है कि मौसम पूर्वानुमान की सटीकता में पिछले दशक में सुधार हुआ है और बाढ़ के लिए विभिन्न नदी घाटियों में वर्षा पूर्वानुमान तथा चेतावनी प्रणाली संचालित हैं। अब अगली चुनौती इन चेतावनियों को स्थानीय स्तर पर तत्काल कार्रवाई में बदलने की है। शहरों की जलनिकासी केवल नाला सफाई तक सीमित क्यों? शहरी बाढ़ का सबसे बड़ा सबक यह है कि पानी को केवल निकासना पर्याप्त नहीं है। पानी कहाँ से आएगा, किस प्राकृतिक रास्ते से जाएगा और शहर की मौजूदा संरचना उसे किनना स्थान देती हैकृ इन सभी पहलुओं को नगर नियोजन का हिस्सा बनाना होगा। झीलों तालाबों नालों, राजकालुवे और प्राकृतिक

जलमार्गों पर बढ़ता दबाव शहरों की जलधारण क्षमता को प्रभावित करता है। जब प्राकृतिक जलनिकासी मार्ग संकरे या अवरुद्ध होते हैं और दूसरी ओर कंक्रीट का विस्तार बढ़ता है, तो थोड़े समय में हुई तेज बारिश भी जलभराव को गंभीर रूप दे सकती है। इसलिए हर शहर को अपने जल निकासी मानचित्र को समय—समय पर अद्यतन करना चाहिए। केवल नालों की सफाई पर खर्च करने के बजाय यह देखना होगा कि वर्षाजल के प्राकृतिक प्रवाह में बाधा कहाँ है। झीलों और आद्रभूमि शहर की प्राकृ तिक सुरक्षा हैं शहरी विकास में झील और आद्रभूमि को खाली जमीन समझना भारी भूल साबित हो सकता है। ये जल संरचनाएं बारिश के समय अतिरिक्त पानी को रोकने और धीरे-धीरे उसे प्राकृतिक प्रणाली में पहुंचाने में भूमिका निभाती हैं। इसलिए झीलों का संरक्षण केवल पर्यावरणीय मुद्दा नहीं,

बल्कि शहरी बाढ़ प्रबंधन और नागरिक सुरक्षा का भी विषय है। विकास जरूरी है, लेकिन विकास की कीमत यदि प्राकृतिक जल निकासी व्यवस्था के विनाश के रूप में चुकानी पड़े तो लंबे समय में वही विकास शहर के लिए जोखिम बन सकता है। मौसम चेतावनी तभी सफल, जब जनता तक पहुंचे चेतावनी प्रणाली का महत्व तभी है जब चेतावनी समय पर और समझ में आने वाली भाषा में नागरिकों तक पहुंचे। केवल यह कहना कि किसी स्थान में भारी बारिश की संभावना है, झीलों और आद्रभूमि शहर की प्राकृ तिक सुरक्षा हैं शहरी विकास में झील और आद्रभूमि को खाली जमीन समझना भारी भूल साबित हो सकता है। ये जल संरचनाएं बारिश के समय अतिरिक्त पानी को रोकने और धीरे-धीरे उसे प्राकृतिक प्रणाली में पहुंचाने में भूमिका निभाती हैं। इसलिए झीलों का संरक्षण केवल पर्यावरणीय मुद्दा नहीं,

उदाहरण दिया गया है। जिसमें सेंसर और जांचित वास्तविक समय की जानकारी भी जोखिम वाले क्षेत्रों तक चेतावनी पहुंचाने की व्यवस्था शामिल है। भारत के दूसरे शहर भी स्थानीय जरूरतों के अनुसार ऐसी तकनीक अपना सकते हैं। लेकिन तकनीक के साथ प्रशिक्षित कर्मचारी, स्पष्ट जिम्मेदारी और स्थानीय समुदाय की भागीदारी भी उतनी ही जरूरी है। जलवायु संकट का असर अर्थव्यवस्था पर भी चरम मौसम का प्रभाव केवल जनजीवन तक सीमित नहीं रहता। कृषि उत्पादन, खाद्य कीमतें सड़क और बिजली ढांचा, छोटे कारोबार, श्रम उत्पादकता तथा सरकारी वित्तकृ सभी प्रभावित हो सकते हैं। इसका एक उदाहरण इस वर्ष चावल उत्पादन को लेकर सामने आया है। रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार, 2026 में भारत का चावल उत्पादन लगभग एक दशक में पहली बार घटने और करीब 10 मिलियन टन तक कमी आने का अनुमान है।

पुस्तक समीक्षा – पुस्तक– अपने भी हैं अजनबी



रचना – राजाराम सिंह कवि एवं साहित्यकार, समीक्षक—लालबहादुर चौंसिया लाल, आजमगढ़ जनपद के प्रतिष्ठित

साहित्यकार, साहित्य भूषण से सम्मानित कविवर राजाराम सिंह द्वारा रचित पुस्तक

छपने भी है अजनबी॥ देहा संहर पढ़ने का सुखद अवसर प्राप्त हुआ। देहा हिंदी छंद विधान का बहुत ही शक्त और बहुचर्चित छंद है। देहे को प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक अनेकोंकवियोंने अपने भाव प्रकट करने का माध्यम बनाया तथा इसी छंद विधान मेंअपनी बातेंकही। जिसमें कबीरदास, तुलसीदास, रहीम दास व बिहारी लाल जी का नाम बहुत ही श्रद्धा व सम्मान के साथ लिया जाता है। पु्तक की अंतिम नौ अनुकांत रचनाओं को छोड़कर सभी रचनाएं देहा छंद पर आधारित हैं। श्री राजाराम सिंह जी ने कोरोना वायरस के व्यापक दंश को जैसा देखा, सुना वैसा अपनी लेखनी में उतारा। पु्तक का शीर्षक एक विरेघाभास लिए खड़ है। छपने भी हैअजनबी॥ प्रश्न उठता है जो श्पननाश है वह कैसे श्अजनबीश हो सकता है। क्योंकि जो अपना है वह कभी अजनबी नहीं होता। किंतु काल के प्रभाव व कोरोना जैसी घातक छुआछूत की बीमारी ने अपनों को भी अजनबी जैसा व्यवहार करने पर मजबूर कर दिया। इसके पीछे मूल कारण

है मृत्यु के भय का। जिसको स्पष्ट करते हुए कविवर राजाराम सिंह जी लिखते हैं– अपने भी हैं अजनबी, मिलने से मजबूर। एक साथ ही जी रहे फिर भी कितने दूर।। सच्चा कवि ही समाज का आइना होता है। वह समाज मेंजीता है। समाज के हॉर्नेल्लास उसेआह्लादित करते रहते है। किंतु समाज की विस्मृतियां तथा समाज की पीड़ा उसे पीड़ित भी करती है। उसी विस्मृतियों ने कवि व साहित्यकार श्री राजाराम सिंह जी के मन को आहत किया। क्योंकि कोरोना वायरस महामारी से पूरा देश त्राहिताम बेल पड़ था। तब राजाराम सिंह जी का आहत मन लिखने पर मजबूर हो गया– बला कहाँ से आ गई जीना हुआ मुहाल। मरत मुश् संसार पर पड़ काल का जाल।। कोरोना जैसी छूत की बीमारी से बचने के लिए टीवी में अखबारों में सोशल मीडिया के माध्यम से जो भी बातें चिल्ला चिल्ला कर रात दिन बताई गई थी, उसे कवि ने बड़े शालीनता से एक देहे के माध्यम से बताने का सफल प्रयास किया है– हाथ मिलांना छोड़कर जोड़े हाथ जुडूर। करो

नमस्ते दूर से रहे कोरोना दूर।। कोरोना का विनाशकारी तांडव देख कवि मन व्यथित था। उससे भी ज्यादा व्यथित तब हुआ जब सरकार की गलत नीतियों सारे समाज को और भी तोड़ने का काम कीं। कोरोना काल में जब चुनावी घोषणा होती है और सरकार संपूर्ण समाज को चुनाव की आग में झोंकने का प्रयास करती है।ऐसे में कवि राजाराम सिंह जी लिखते हैं– देश कोरोना से जले, तुम साधते चुनाव। साहिल पर है डूझरी,देख ठहर कर नाव।। कोरोना का भयावह संकट किससे अच्छा है। सबसे बड़ी दुर्दशा तो उन कामकाजी लोगों को हुई जो अपना घर बार छोड़ परदेस को गए थे। कल कारखाने बंद, यातायात के साधन बंद,ऐसे में उन मजदूरों की दुर्दशा किस से अच्छी है। भोजन के लाले पड़ गए। जब कामकाजी लोग शहर में अपने को असुरक्षित मान चुके थे। ऐसे में शहर छोड़कर अपने गांव व बड़े शालीनता से एक देहे के माध्यम से बताने का सफल प्रयास किया है– हाथ मिलांना छोड़कर जोड़े हाथ जुडूर। करो

सचमुच मजबूर हो गए। जिसे देख कवि मन मर्महत हो गया और चिल्ला पड़– धरती तपे पांव जले, बरस रही है आग। विवस मजूरा घर चला,सारे सपने त्याग।। पु्तक छपने भी हैअजनबी॥मेंडॉ राजाराम सिंह जी ने चाइना की कुटिल चाल का भी जिक्र बखूबी किया है चीन को ललकार ते हुए श्री सिंह जी कहते हैं– हिंद भूमि गलवान हैमत अपने से जोड़। सतर्क सैनिक देश के, गर्दन देंगे तोड़।। चाइना के प्रति नेपाल के उमड़े प्रेम को बड़े हैं,जैसे गिरे गुलाम।। डॉ राजाराम सिंह जी ने अपनी पुस्तक छपने भी हैं अजनबी॥ में समुद्री तूफान अफ़फ़ान, बाढ़ का महाकाल, बाढ़ से परत मुंडई, पावन अवधपुरी, भयंकर ठंड जैसे शीर्षक से आंदोलित करती हुई समाज को उन्होंने विविध रंग ढंग के दोहे को भी उकेरा जो पाठकों को समाज से रूबरू

होने का सफल प्रयास करते हैं। समाज में व्याप्त समस्याओं को गिनाते हुए बताते तथा समस्याओं से निजात पाने का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। कविवर राजाराम जी के मन में लोकमंगल व लोक रक्षण की भावना पूर्ण रूप से समाहित है।वे सदैव विलुप्त होती मानवीय संवेदनाओं पर जोरदार प्रहार करते हैं जो किसी कविता का मूल धर्म है। दोहो की रचना में यदा–कदा मात्राओं का दोष है जो नगण्य के बराबर है। कविवर राजाराम जी ने भावों के उद्गार को कलम बंद करने का जो माध्यम बनाया गया है वह नमन योग्य है। मैं कविवर श्रद्धेय राजाराम सिंह जी के दिर्घायु होने की कामना करता हूं तथा उनसे साहित्य व समाज को मजबूती प्रदान करती ऐसी ही अनेकों पुस्तकों के प्रकाशित होने की अपेक्षा करता हूं। अस्तु। समीक्षक –लालबहादुर चौंसिया लाल गोपालगंज, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश

